एक पत्र वर्ष 2018 के नाम

2018 तुमने हमें एक सेकेण्ड भी वेट नहीं कराया,तुम घड़ी की सुई पर चलकर आ गये, हमें बिल्कुल भी तुम्हारा इन्तजार नहीं करना पड़ा, तुम्हारा हार्दिक स्वागत है, वैसे हमें तुम्हारे आने की बेहद खुशी भी थी, इसका ये कतई आशय नहीं कि हमें 2017 के साथ रहना नागवॉरा या मजबूरी थी बिल्कुल भी नहीं, तुमसे हम पहली बार मिल रहे हैं मिलने की अद्भुत खुशी है वैसे अब तो हम आपसे 365 दिन मिलेंगें, पर तुम्हें सबसे अलग नये क्लेवर में देख रोमांचित हैं और ये सोचकर कर अति उत्साहित भी हूँ कि तुम अपने अन्तस में अनेक अवसर व संभावनाओं को समेट रखे होंगें, जो ताश के पत्तों की तरह एक–एक निकालते रहोगे, हम तुमसे वादा करते हैं कि जिस अन्दाज व नजरिये के साथ तुम आये हो हम उसी जिन्दादिली के साथ तुम्हारा अभिनन्दन करते हैं, और हम उसी रूप में स्वीकार करते हैं, हमने 2 जीरो एक सात को भी खूब इन्जॉव किया, जिसने आते ही तपस्या मास के कारण अनेक दुआवों के दरवाजे खोल दिये थे, नये क्षितिज प्राप्त किये, अनेक संभावनाओं को यथार्थ के धरातल पर साकार कर दिया, अपने अंकों में जादुई अर्थ समाये हुए हमें नित नये पुरूषार्थ की प्रेरणा देता रहा, जिसका भरपूर चांस हमने बखूबी लिया भी, हॉ कहीं – कहीं हमें असफलताओं से भी सामना हुआ, पर उन विफलताओं ने भी हमें अनुभवों की शिक्षा से तो निखारा ही, 2017 में हमने कई छोटे–छोटे लक्ष्य भी निर्धारित किये थे, जिनके उमंग में सपनों को समय से पहले ही उड़ने के पंख लगा दिये थे, पर कहीं–कहीं हमने

गल्तियाँ भी की पर अब उन पर डबल अटेन्शन है, कई ऐसी चुनौतियाँ भी आयीं जिनकी विभीषिका में कर्मठता जवाब देने लगी थी, पर कई बार चैलेन्ज चांसलर बना गये और मनोबल को नई रफ्तार पकड़ा दी, हाँ 2017 में थोड़ा हमने माया के लेटेस्ट पॉश अति आधुनिक चमकीली चकाचौंध में फँस सोशल मीडिया में चक्कर खाकर समय की बेहोशी में आ गये, ऐसा नहीं है कि हम इससे अवगत नहीं या हमको श्रीमत याद नहीं, पर पता नहीं कैसे कई बार इस मुर्छा में आकर कई स्वर्णिम अवसर हाथ से फिसलते नजर आये, पर अब 100 परसेन्ट एलर्ट हैं, जो गल्तियाँ 2017 में चाहे कैसे भी हुई पर अब उन्हें रिपीट नहीं करना है, हम ऐसा भी नहीं सोच रहे हैं कि तुम मेरे लिए कोई चैलेन्ज लेकर नहीं आओगे, पर अब चैलेन्ज को चैलेन्ज देने का अचूक शस्त्र रेडी है। 2018 हम तुम्हें एक नये क्षितिज के रूप में देख रहे हैं जिसमें अनेक मंजिलों की बुनियाद छिपी होगी ? जिस प्रकार सम्पूर्णता के लिए बाबा ने 18 अध्याय पूरे किये थे वो 18 अध्याय हमें भी पूरे करने का संयोग का सौभाग्य लेकर आये हो, मुझे पूरा यकीन है कि हम नये उमंग के साथ तुम्हारे नये परिवेश में भी अन्तिम सोपान तक कर्मव्रत रहेंगें । हाँ 2017 से भी हमें कोई शिकायत नहीं है, उसने तो हमें सदा 2 जीरो एक साथ रहने के अनेक संकेत व अनेक सुअवसर उपलब्ध कराये, पर हम ही अलबेलाई में आकर मैं मेरे बाबा के साथ न रहकर अनेकों का साथ ले ले कर कई बार सत्यानाश ही करने पर आ गये, पर सत्तरह ने हमें सत्तर बार भी सतर्क करके बचाया, जिसके लिये हम 2017 को बार-बार शुक्रिया तो कहेंगें ही

पर शुभ ही किया ये भी अवश्य कहेंगें, और तुम्हें भी हम पूरी संजीदगी के साथ लेंगें, तुम मेरे वादों–इरादों का प्रतिबिम्ब बनने वाले हो, 8 की माला हो या 1 और 8 के बीच में जीरो लग जाये अर्थात 108 की माला या 108 की दूसरी माला में भी आप 20 – 18 का भी अन्तर नहीं रखने वाले हो, इसलिए हम तुम्हें बिल्कुल नये आयामों, नये मंसूबों, नये के अनुरूपों से लेकर 2 बार जीरो लगने के बाद तो एक ही साथ आठ ही शक्तियाँ लगाकर चलेंगे, 2017 ने हमें पहले ही दिन से ही धमाकेदार सफलता की इन्ट्री दी थी, नये पुरूषार्थ में नई अनुभूतियों के साथ परिवार की प्रशंसा के ब्लैसिंग्स ने सफलता की नई इबारत ही लिख दी थी, मुझे विश्वास है कि 2018 में भी हम इस उम्मीद के साथ चलेंगें कि तपस्या की सीढ़ियों के कदमों पर एक बल – एक भरोसा से चढ़कर अचल–अडोल एवं एक रस स्थिति के शिखर को प्राप्त कर अविनाशी खुशियों की महफिलें तसदीक करेंगें, और 2017 में जो कोशिशें नाकाम रही या कमजोरियों की जड़ें गुप्त ही सही पर सजीव व गतिशील रहीं उन पर भी इकबाल करेंगें, और 2017 में जो दो जीरो एक साथ सदा रहने में नाकामयाब रहे, वो 2018 में निश्चित आठों याम रखने का प्रबल पुरूषार्थ करेंगें, योग की प्रज्जवलित अग्नि की तासीर अन्तस की गहराई में रख पवित्रता के प्रतिबिम्ब की परिकल्पना को साकर करेंगें, 2018 तुम्हारे संग सम्पूर्णता के साथ संपन्नता का आगाज ही नहीं अंजाम तक ले जायेंगें ।

ओम शान्ति